

खलिश

दिल के किनारों से

जुबिन सलूजा



BlueRoseONE[®]
Stories Matter

New Delhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS

India | U.K.

Copyright © Jubin Saluja 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author.

Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.



BlueRoseONE!
STORIES MATTER
New Delhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication,
please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS

www.BlueRoseONE.com

info@bluerosepublishers.com

+91 8882 898 898

+4407342408967

ISBN: 978-81-6744-094-5

Cover Design: Deepak Katheria

Typesetting: Manisha Rawat

First Edition: September 2026





लेखक के बारे में

जुबिन सलूजा पेशे से चार्टर्ड अकाउंटेंट हैं, जहाँ ज़िंदगी का एक बड़ा हिस्सा अंकों, हिसाब और संतुलन में गुज़रता है। लेकिन शायद दिल का हिसाब कभी इतना आसान नहीं होता।

उदयपुर की झीलों और खामोश शामों के बीच पले-बढ़े जुबिन ने उन एहसासों को शब्द देना शुरू किया, जिन्हें अक्सर इंसान महसूस तो करता है, मगर कह नहीं पाता।

‘खलिश: दिल के किनारों से’ उनकी पहली किताब है। लेकिन ये शायरी अब पहली बार नहीं लिखी गई। कुछ अल्फ़ाज़ तो बरसों से दिल के किसी कोने में ठहरे हुए थे, बस उन्हें काग़ज़ तक पहुँचने का इंतज़ार था।

उनकी शायरी मोहब्बत से शुरू होकर अक्सर उन जगहों तक पहुँचती है जहाँ मोहब्बत के बाद इंसान खुद से मिलता है। टूटे रिश्ते, अधूरी बातें, अनकहे जज़्बात, इंतज़ार, तन्हाई, यादें और ज़िंदगी के वे छोटे-छोटे सच, जिन्हें समझने के लिए कभी-कभी पूरी उम्र कम पड़ जाती है।

जुबिन के लिए शायरी किसी भावना को सजाने का नाम नहीं, बल्कि उसे वैसे ही महसूस करने का नाम है जैसे वह भीतर जन्म लेती है। बिना हिसाब, बिना तर्क और बिना किसी आखिरी जवाब के।

शायद इसीलिए, एक ऐसे व्यक्ति के लिए जिसका पेशा हिसाब मिलाना है, कविता वह जगह बन गई जहाँ दिल को किसी हिसाब की ज़रूरत नहीं।

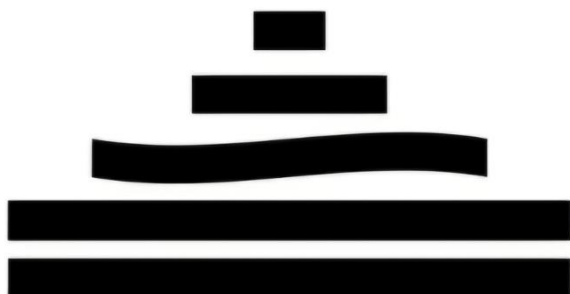
यह किताब उनकी ज़िंदगी की कहानी होने का दावा नहीं करती। यह उन तमाम एहसासों का आईना है, जो कभी उनके अपने रहे, कभी किसी और के, और कभी सिर्फ़ ज़िंदगी को करीब से देखने से जन्मे।

कहीं आपको इसमें अपना कोई अधूरा रिश्ता मिल सकता है, कहीं कोई पुरानी याद, कहीं कोई ऐसा सवाल जिसका जवाब आज भी नहीं मिला।

और अगर इन पन्नों के बीच कोई एक शायरी पढ़कर आप कुछ पल ठहर जाएँ... किसी को याद कर लें... या बस इतना महसूस करें कि ‘ये तो मेरे दिल की बात है...’

तो शायद खलिश अपने मुक़ाम तक पहुँच गई।

क्योंकि कुछ बातें कही नहीं जातीं, बस महसूस होती हैं। और कुछ एहसास लिखे नहीं जाते, बस दिल के किनारों पर रह जाते हैं।



अनुक्रमणिका

राहों में तन्हा	1
इज़हार से पहले	2
कह देते तो अच्छा था	3
किसी गैर से मुलाकात	4
तेरी आँखों का करिश्मा	5
कयामत के लम्हे	6
पालित ज़हर	7
टूटते तारे सा प्यार	8
बंजर कर गई	9
मुखौटे वाले चेहरे	10
बदल चुके थे तुम	11
इश्क़ का पागल	12
प्रेम या मोह?	13
खुद की तलाश	14
हँसी के पीछे	15
हँसते-हँसते पिया हुआ ग़म	16
ज़ुबान और ज़मीर	17
वो मासूमियत कहाँ खो गई	18
प्रतिबिंब और वास्तविकता	19
थका हुआ मुसाफ़िर	20
दिल के तट पर	21
दिल का संदूक	22
नादान उम्र का मोड़	23
जीवन का प्रश्न	24
वो लम्हा, वो एहसास	25
अधूरा एहसास	26

मुझे क्या हो गया था.....	27
दिल के किनारे.....	28
रूहानी एहसास.....	29
अधूरे सवाल.....	30
इंतजार.....	31
वो वक़्त-ए-खास.....	32
उन राहों का सफ़र.....	33
ज़िन्दा लाश.....	34
यादों की चाँदनी.....	35
दूरी और हकीकत.....	36
अनकहे जज़्बात.....	37
मीठी बातों का धोखा.....	38
वो बचपन ही अच्छा था.....	39
खामोशी का राज़.....	40
वो बचपन की गलियाँ.....	41
खुद से वफ़ा.....	42
अनकही बात.....	43
अपनों की मुस्कान.....	44
सूनी राहें.....	45
इंतजार की धड़कन.....	46
दिल कुछ और समझा था.....	47
इश्क़ का दर्द.....	48
रज़ा में चलना.....	49
अनकहा आभास.....	50
आखिरी सलाम.....	51
एकतरफ़ा.....	52
मीठा ज़हर.....	53
वो मदहोश महफ़िल.....	54
खाली बोतल.....	55

सच की दोस्ती	56
दगा के बाद	57
मौन के अंदर	58
यादें और विश्वासघात	59
छूटा हुआ अहसास	60
जीवन की राहें	61
खुद से मुलाकात	62
फिर से बचपन	63
अधूरा सा मैं	64
वो शख्स खो चुका है	65
इजहार-ए-इश्क	66
औकात का एहसास	67
अधूरे रिश्ते	68
गहरे राज	69
वफ़ा की पुकार	70
तेरे नाम की मुस्कान	71
खुद को समझना	72
चाँद और गुरूर	73
प्यार की कसौटी	74
ख्वाब	75
अनजाना सा रिश्ता	76
दर्द की आदत	77
नज़र का असर	78
अधूरापन	79
जनाज़े की सच्चाई	80
दिल की दस्तक	81
शक और वफ़ा	82
खामोश मोहब्बत	83
लफ़्ज़ों का जाल	84

भुला न पाए.....	85
जिंदगी और जीना.....	86
खफ़ा या बेवफ़ा	87
इज्जत और एहसास.....	88
दिल के राज़	89
एकतरफ़ा प्यार.....	90
तेरी किस्मत के नाम	91
अधूरा इजहार.....	92

राहों में तन्हा



वो कहते हैं कि ज़िंदगी में एक-दूसरे को समझना बहुत ज़रूरी है,
कभी तेरा उससे मिलना, कभी उसका तुझसे मिलना - ऐसी भी क्या मजबूरी है?

नहीं-नहीं, मैं तो उसे बस तुम्हारा दोस्त ही समझ रहा था,
पर जब उसके गाल पर तेरे होंठ देखे, तो सोचने लगा -
क्या दोस्ती में इसकी भी मंजूरी है?

बहुत समझाने पर तेरी इस परिस्थिति को भी मैं समझा,
कभी तुम्हें समझा, कभी दोस्तों को समझा, कभी घर के अपनों को समझा।

न जाने कहाँ से फिर मन में एक सवाल आया -
कि मैं तो सबको समझा, पर मुझे किसने समझा?

तुमको इतना समझने के बाद जब मैं राह पर चलता जा रहा था,
उन राहों पर मैं खुद को तन्हा क्यों पा रहा था

जब आँख बंद की और मैंने इस बात को समझना चाहा,
एक अजीब दृश्य मेरी बंद आँखों के सामने आया -
तब मैंने अपनी खुशियों को सूली पर टंगा पाया।



इज़हार से पहले



वो उसके छूने से जो ज़िंदगी में स्वाद आया,
वापस कभी न दोबारा वैसा एहसास आया।
जब तक उससे मैं अपने इश्क़ का इज़हार करता,
उसका शादी का कार्ड मेरे घर पर आया।



कह देते तो अच्छा था



जाने से पहले इतना तो बताते कि तुम्हें वापस नहीं आना है,
तुम्हारी इस ज़िंदगी में किसी गैर का आना-जाना है।

मैं बेवजह ही टूटते तारों की तलाश में था,
पहले ही कह देती कि ये इश्क़ मुझे सभी से निभाना है।



किसी गैर से मुलाकात



सुनता जा रहा हूँ मैं तेरी हर बातों को,
समझता जा रहा हूँ मैं तेरे जज़्बातों को।
कंधा तक दिया मैंने तेरे हालातों को,
क्या समझूँ अब मैं
किसी गैर से तेरी उन मुलाकातों को।



तेरी आँखों का करिश्मा



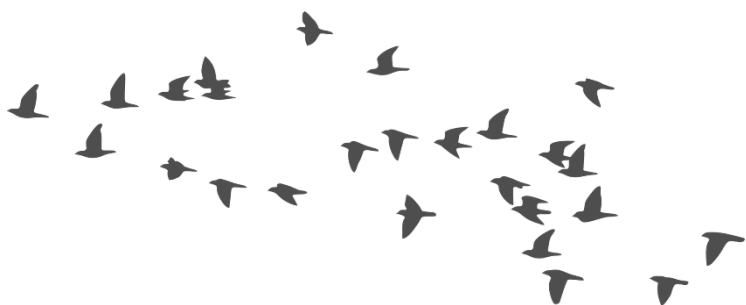
वक्रत ने दीदार उन अखियों का किया,
जिन अखियों के दीदार से वक्रत रुक गया।

जब ये नज़रें मिली थीं उनसे,
लगा जैसे गहरे समंदर से इक मोती मिल गया।
उन अखियों की तेज़ी और वो पलकों की सेज,
देखते ही देखते मैं कहीं उनमें खो सा गया।
आँखें बंद करके भी दिखती हैं वो आँखें तेरी,
तेरा ये फ़ितूर क्या ग़ज़ब सा छा गया।

जब देखी तेरी उन अखियों की नज़ाकत,
ये दिल तब से मेरा नहीं, बस तेरा हो गया।

वैसे तो विश्वास कम था हमें खुदा पर,
तुझे देख खुदा के करिश्मे पर विश्वास हो गया।

वक्रत ने दीदार उन अखियों का किया,
जिन अखियों के दीदार से वक्रत रुक गया।



क्यामत के लम्हे



जब लम्हे आए क्यामत के,
तब उसने याद फिर मुझे किया।
दास्तां सुनाई उसने मुझे अपनी,
तब उसकी तकलीफों को कुछ पल मैंने जिया।

फिर जो अश्रु टपके उसके नयन से,
उन अश्रुओं को पोंछ मैंने दिया।
जब कुछ वक्त गुजरा, वो लम्हे गुजरे,
तब उसने मुझे वापस याद तक न किया।

भूल गया था ये कि दुनिया खुदगर्ज है,
फिर अच्छाईयाँ दिखाने का मन मेरा वापस न किया।



पालित ज़हर



वो क्या बेगैरत थी जो ये गुनाह कर गई,
वो क्या बेगैरत थी जो ये गुनाह कर गई,
इस इंसान की खुशी को पल भर में फ़ना कर गई।
इल्म तो था उसको, फिर भी उसने ये गुस्ताखी की,
साँप को पालना चाहा था - जो पल भर में ज़हर उगल गई।



टूटते तारे सा प्यार



वो दास्तान भले ही तेरी थी,
पर वो भी कुछ हद तक मेरी थी।

वो एहसास प्यार का जो हुआ था,
जब तूने दिल से मेरे दिल को छुआ था।
वो एहसास तेरे गले लगने का, तेरे हाथ पकड़ने का जो मुझे था,
क्या पता था मुझे - ये सब तो तेरा हर दूसरे के साथ हुआ था।

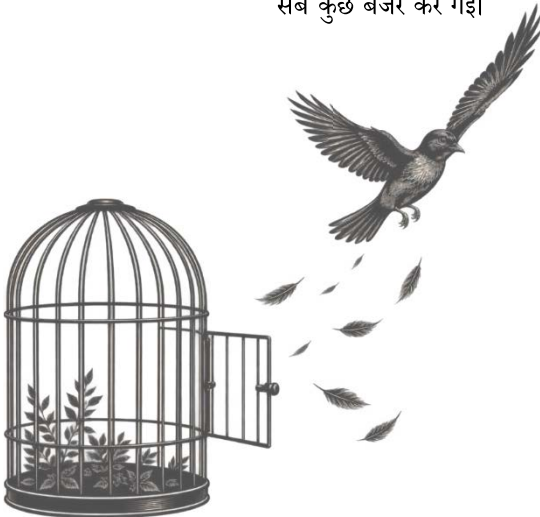
वो महल मैं मन में सजा चुका था,
किसी टूटते तारे के समान पल भर में ओझल हो चुका था।
बात अभी की करूँ या पहले की, उस रब से मैं दुआ यही करता था,
कि खुश रखना तुम उसे, जिसे मैं ये दिल दे चुका था।



बंजर कर गई



एक पल में दिलों के जज़्बातों को वो खंडर कर गई,
वो जो मेरी जान थी, आज सब कुछ बंजर कर गई।
वो खुशियाँ, जिनका एहसास अभी-अभी हुआ ही था,
उन खुशियों में भी वो खंजर कर गई।
वो जो मेरी जान थी, आज सब कुछ बंजर कर गई।
ना धड़का ये दिल फिर किसी के लिए,
न जाने वो कैसा मंजर कर गई।
वो जो मेरी जान थी, आज सब कुछ बंजर कर गई।
जो इंसान दिलों को इबादत समझता था,
आज उनसे खेल रहा था - वो उसे इतना बदल कर गई।
वो जो मेरी जान थी, आज सब कुछ बंजर कर गई...
सब कुछ बंजर कर गई।



मुखौटे वाले चेहरे



ऊँचियाँ, लंबियाँ बड़ी तारीफ़ें,
ओ निकलें अंदरों चालें चलावे।
दिखदे दिलां दे अमीर सी,
पर चेहरे ते मुखौटा है पावे।

घुट-घुट के जींदे रहंदे सी,
पर अकड़ फिर वी ना जावे।
तरसदे आ हुन दोस्तां नूं,
पर लोकां नूं एह कौन समझावे।

रो-रो के हुन थक गए आ,
हुण किस्मत च कोई खुशियाँ लिख जावे।
हुण इक दुआ रब नूं मैं करदा हां,
बस मेनूं मौत चंगी जी आवे...
मेनूं मौत चंगी जी आवे।



बदल चुके थे तुम



सुनकर भी क्यों सुना नहीं था तुमने,
जानकर भी क्यों रास्ता अलग चुना था तुमने।

सोचता हूँ कि ऐसी क्या सोच में थे तुम,
उन राहों पर चलते क्यों भटक चुके थे तुम।

जिसे मैं जानता था, वो अब रहे न तुम,
पता नहीं इतने क्यों बदल चुके थे तुम।

जब पता चला तब सब समझ आया,
कि ये तो इश्क़ था - जिसमें खुद से ही दूर हो चुके थे तुम।



इश्क का पागल



हाल देखो ज़रा उसका,
कहाँ-कहाँ ये ठोकर खाता है।
इंसान था ये कभी,
पर अब पागल कहलाता है।

ये कैसा जादू किया तूने, ओ खुदा,
प्यार में ये जो डूबा था, क्या से क्या हो गया।
ऐसा ग़ज़ब का खेल फिर इसके साथ हुआ,
इंसान था ये... पर अब पागल हो गया।



प्रेम या मोह?



व्यक्तित्व की बात करूँ या अस्तित्व की,
प्रेम ये सब कुछ बदल क्यों देता है?
क्या सच में ये प्रेम है - या बस मोह की माया,
जो इंसान से उसी को छीन लेता है?



खुद की तलाश



वो सफ़र ही क्या सफ़र था, हमसफ़र ही बेखबर था,
तलाश थी तो बस खुद की, औरों से न कोई दर्द था।

रूठा नहीं था मैं,
रूठा नहीं था मैं - बस कहीं खो सा चुका था।
नए रास्तों पर चला था, कभी हँसा, कभी रो सा रहा था।
उस जीवन के मोड़ पर हाँ, ज़रूर मैं गिरा था,
पर रुका नहीं था मैं, फिर भी चलता रहा था।
डर जो था बस इतना कि औरों को न कोई दर्द हो,
ये रास्ते चुने हैं मैंने - मेरा न कोई कर्ज हो।

एक सवाल था तो खुद से -
क्या तू अपने फ़र्ज अदा कर रहा था?
खुद को पाने की उम्मीद में,
क्या कुछ मैं कर रहा था?



हँसी के पीछे



ये ज़िंदगी के जो दर्द हैं इस दिल में ही समाए हैं
आंसुओं के रूप में आज कुछ राज़ बाहर आए हैं
तुम क्यों होते हो परेशान इन तकलीफों से मेरे दोस्त
हर जगह लोगों ने हंसी के पीछे दर्द ही छुपाए हैं



हँसते-हँसते पिया हुआ ग़म



वो रूह जो मेरे सामने आई है,
फिर उसने दर्द की दास्तान सुनाई है।

रोया नहीं मैं, पर रोने को जी चाह रहा था,
खुद को संभाल कर मैं दूसरों को संभाल रहा था।

ऐसा नहीं है कि दर्द न हुआ हो मुझको,
तड़पा नहीं मैं, रोया नहीं मैं -
तो क्या हुआ, पर सह ज़रूर रहा था उसको।

खयाल ज़रूर आता था मुझको -

क्या गुनाह किया है मैंने,
जो ये सब मेरे मुकद्दर में लिखा है?
डर लगने लगा था मुझको,
न जाने ये क्या हो रहा है।

खुशियाँ बाँटने की कोशिश फिर भी की थी मैंने,
कुछ सवालों की तलाश में - कि ये ज़िंदगी क्या कहने आई है।

डरते-संभलते उन राहों पर चल तो रहा था,
शायद उसी से मेरा हौसला बुलंद हो रहा था।

बात तो सही है कि मैं कुछ बदल नहीं सकता,
सब सच जानते हुए भी मैं क्या ही करता।

हारा नहीं हूँ मैं,
हारा नहीं हूँ मैं - दूसरों की खुशियों के लिए जिया हूँ
तबाही का घूँट ही सही, मगर हँसते-हँसते पिया हूँ...
तबाही का घूँट ही सही, मगर हँसते-हँसते पिया हूँ।

ज़ुबान और ज़मीर



मेरे खिलाफ़ ख़ूब लोग मिलेंगे तुम्हें,
मेरे खिलाफ़ ख़ूब लोग मिलेंगे तुम्हें,
क्योंकि मेरी ज़ुबान पर उनकी ज़ुबान नहीं।

उनका खैया - उनकी गिरगिटि फ़ितरत है,
उनका खैया - उनकी गिरगिटि फ़ितरत है,
वरना इतनी अच्छाइयाँ दिखाने की कोई वजह नहीं।

माना तुमसे रोशन कहीं जहाँ होंगे,
पर सियासी सच्चाइयों के मतलबीपन में खुशियों का कोई मायना नहीं।

दिलेरी की बात करूँ या भले ही दिलदारी की,
इन दोनों को दिखाने की तुममें कोई औकात नहीं।

पहचान भी पाए हो क्या तुम खुद को?
इन हरकतों को देखकर तो लगता है - तुम इंसान नहीं।



वो मासूमियत कहाँ खो गई



वो बचपन की यादें,
वो तेरा मुस्कुराना, वो मेरा तुझे गले लगाना,
आज क्यों उसे गंदी नज़रों से देखता है ये ज़माना?
वो हाथों में हाथ, वो घंटों चलने वाली बात,
क्या दिन थे वो भी - जहाँ रहते थे हम साथ।
वही हाथों में हाथ, वही घंटों चलने वाली बात,
आजकल लोगों को ये चुभते क्यों हैं दिन-रात?
जब वो सही था, तो ये क्यों नहीं?
और अगर ये सही है, तो करने दिया वो क्यों कहीं?
इस सोच में न जाने हम किधर जा रहे हैं,
शायद सच्चे इंसान को भी झूठा बना रहे हैं।
लोग कहते हैं - कभी तो अपनी प्यार की दास्तां बयान करो,
अब उन्हें कैसे समझाऊँ...
कि उसके लिए मेरी रूह का मुझमें ज़िंदा होना ज़रूरी है।



प्रतिबिंब और वास्तविकता



वो तालाब का पानी न जाने क्या जाल रचाता है,
वो तालाब का पानी न जाने क्या जाल रचाता है।

होता तो ज़मीन के नीचे है,
पर आसमान का प्रतिबिंब दिखाता है।

यही तो हाल है आजकल सबका,
यही तो हाल है आजकल सबका।

चेहरे पर कुछ और,
और दिल में कुछ और जज़्बात रखते हैं।

दिखाएँगे तो खुशी,
पर भीतर विचारों का जंजाल रखते हैं।



थका हुआ मुसाफ़िर



थक गया हूँ मैं चलते-चलते,
पाँव दुखने लगे हैं हल्के-हल्के।

मंज़िलें बाकी हैं अभी,
पर जज़्बात नहीं रहे अब वैसे।
बातें तो बाकी हैं बहुत,
पर अल्फ़ाज़ साथ नहीं देते।

इन राहों ने न जाने क्या बतलाया है,
सब जानते हुए भी मुझे सच नज़र न आया है।

न जाने कैसा मंज़र है ये,
जहाँ ग़लत भी सही लगता है।
क्या ये सच में मैं ही हूँ,
या मुझमें बस तेरी कमी को दर्शाता है?



दिल के तट पर



मेरे दिल के तट पर मैंने कुछ जज़्बात देखे,
कुछ एहसास देखे, कुछ अनछुए ख्वाब देखे।
पर इन ख्वाबों का अब मैं क्या करूँ,
न तूने मुझे देखा, न मेरे जज़्बात देखे।
वो कहती थी - “याद भी हूँ क्या मैं तुझे?”

अब क्या बताऊँ...

तेरे जिस्म की खुशबू का असर आज भी मेरे हर एहसास में महफूज है।



दिल का संदूक



दिल के इन संदूकों में कुछ गहरे राज़ छुपे हैं,
कुछ जज़्बात छुपे हैं, कुछ ख्वाब छुपे हैं।
निकलना तो ये एक मुद्दत से चाहते हैं,
उस मिट्टी की परतों को हम भी झटकना चाहते हैं।
पर न जाने इसकी चाबी लेकर आप कहाँ छुपे हैं...



नादान उम्र का मोड़



ये उम्र है नादान, जिससे हम हैं अनजान,
अपने फ़ैसले चुनें या अपने रास्तों को ढूँढते रहें।

ज़िंदगी के इस सफ़र में न जाने हम क्या कर रहे हैं,
उन फ़ैसलों पर विश्वास करें या बस जीने की आस धर रहे हैं।

क्या सही है, क्या ग़लत - इस सवाल की कैसे तलाश करें?

इन विचारों के चलते-चलते, खुद में ही क्यों उलझे रहें?

जिसका जवाब ढूँढते-ढूँढते, हम खुद से ही कटते जा रहे हैं,

खुद को पाने की चाह में जाने क्या-क्या खोते जा रहे हैं।

जहाँ खुद से ही बेख़बर होकर जीवन बिताए जा रहे हैं,

कब तक, पर कब तक यूँ ही जीते चले जा रहे हैं?

क्या कभी खुद से फिर मिलेंगे हम,

या बस यूँ ही साँसों के सहारे जीते रहेंगे हम?



जीवन का प्रश्न



जीवन...

क्या है यह जीवन?

अगर यह जीने का नाम है,
तो न जाने यह इतना बदनाम क्यों है।
क्या यह बस दुःख सहने का ही अंजाम है,
या फिर यह झूठ का दूसरा नाम है?



वो लम्हा, वो एहसास



वो वक़्त-ए-ख़ास, वो मुस्कुराहट की आस,
और उसके हँसते ही उठे मेरे दिल के जज़्बात।

ख़ुदा के करिश्मे की क्या बताऊँ वो बात,
बस होने लगा था मुझे इस धरती की ख़ूबसूरती पर विश्वास।



अधूरा एहसास

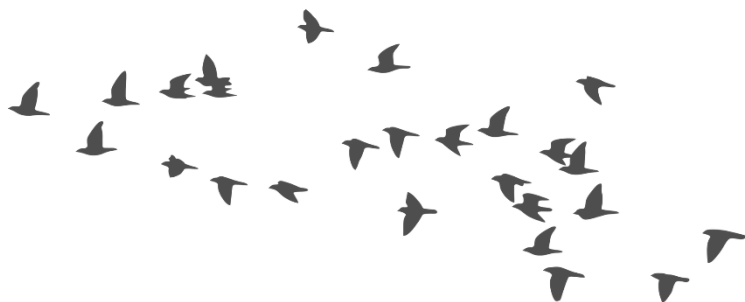


बस उस वक़्त की तलाश में,
खो चुका हूँ उन ख़्वाबों की आस में।
क्या खोया है, क्या पाया है -
न जाने आज क्या है मेरे पास में।

वो जो वक़्त गुज़ारा तेरे साथ है,
उन यादों का आज भी इस दिल में वास है।
फिर भी क्यों ये एक अधूरा एहसास है?
क्या पता तुम्हें भी ये सब याद है?

दिल के हर ज़र्रे में कुछ आँसुओं की बूँदें हैं,
उन ख़यालों में, उन ख़्वाबों में हम तुम्हें ही बस चूमते हैं।

क्या तुम्हें वो कुछ भी याद है?
सच कहो - जो दिखाया था, क्या वो प्यार है?



मुझे क्या हो गया था



जब वो वक्रत नज़दीक था आया

ये दिल तब मेरा घबराया।

हर रोज़ जो ये धीरे-धीरे धड़क रहा था,

जी रहा था या बस यूँ ही चल रहा था?

न जाने क्यों ये कहीं खो सा गया था,

पता नहीं ये मुझको क्या हो गया था।

सोते-जागते ये मुझसे कुछ तो कह रहा था,

“तू खुश है क्या?” - ये सवाल जाने क्यों पूछ रहा था।

जवाब की तलाश में, हर पल उस एहसास में,

वो जीने की आस में -

रोते हुए भी ये बस हँस रहा था।

कुछ तो हुआ था, हाँ कुछ तो हुआ था,

न जाने इसने किन भावों को छुआ था।

पता नहीं ये मुझको क्या हो गया था,

पता नहीं ये मुझको क्या हो गया था।



दिल के किनारे



वो दिल के उन किनारों पर
कुछ यादें सिमटी रहती हैं,
कुछ बातें सिमटी रहती हैं,
कुछ मुलाक़ातें सिमटी रहती हैं।

ऐसा लगता है जैसे
ये हवाएँ हमसे कुछ कहती हैं,
फिर कानों में बस उसकी वही आवाज़
गूँजती रहती है।

दिल पर लगता है अब
मेरा कोई रोक नहीं है,
क्योंकि धक-धक करके ये धड़कन
परेशान करती रहती है।



रूहानी एहसास



वो ये हवाओं का एहसास, वो तेरी आवाज़,
कुछ रूहानी बातों का साज़ -
अनसुना लगता है,
पर क्या करूँ, यही सब सच्चा लगता है।
वक्त का धोखा है या वो वक्त ही अनोखा?
क्या यही जीवन ने दिया है मौका?
बस यही खुदा का सच लगता है,
ये जज़्बात अनसुना लगता है।



अधूरे सवाल



वो उल्फतेँ, वो नज़ारे, वो राज़ कहीं सारे,
आज क्यों तूने सब कर दिए हैं किनारे।
वो ख्वाबों का आना, वो ख्वाहिशों का चाहना,
फिर किन वजहों से छोड़ आए हम वो ज़माना।
वक्त का है तकाज़ा या तेरी है ये ख्वाहिश?
बता भी दो - किस चीज़ की है ये आजमाइश।
कुछ सवाल क्या सवाल ही रह जाएँगे?
क्या ये मेरे मन में ही घर कर जाएँगे?
इनका जवाब शायद हम कभी न पा जाएँगे,
बस अब हम उस खुदा पर भरोसा करना चाहेंगे।



इंतज़ार



सुनने को तेरी आवाज़ अब ये दिल तरसता है,
आँखें तो बरसती हैं मगर ये चेहरा हँसता है।

मालूम है मुझे कि जज़्बात तुझमें भी हैं,
फिर भी ये इंतज़ार मुझे अब अक्सर चुभता है।



वो वक्त-ए-खास



वो वक्त-ए-खास था, वो दीदार-ए-एहसास था,
जब तूने यूँ थामा मेरा हाथ, हाथों में हाथ था।

नज़र तो झुकी थी मेरी, शर्म के मारे,
वो लम्हे कैसे भुलाएँ जो थे इतने प्यारे।

उन लम्हों की याद आते ही तेरी तस्वीर छप जाती है,
लगता है जैसे तू मेरा बचपन से नाता निभाती है।

उन जज़्बातों को अब मैं लफ़्ज़ों में बयाँ कैसे करूँ,
या एक कोरे कागज़ पर बस तुम्हारा नाम लिख दूँ।

क्या पता ये हमारा साथ और कितना ही चलेगा,
क्योंकि विधि के विधान से बढ़कर और क्या ही मिलेगा।

तुम कहो तो मंज़ूर - हम सब कुछ कर लेंगे,

तुम कहो तुम्हें भूलना है - भूल भी लेंगे।

बस तुम्हारे कहने पर ये भी कर लेंगे,

हँसते-हँसते करेंगे... बस ये नहीं कहेंगे।



उन राहों का सफ़र



उन मंज़िलो की बात न करो,
मंज़िलो को देखना सबको अच्छा लगता है।
बात करनी है तो उन राहों की करो,
उन राहों से मंज़िलो का सच पता लगता है।

उन राहों पर चलते वक्त क्या हाल हुआ था,
क्या बताऊँ, जो भी हुआ था कमाल हुआ था।
आँसू भी बहे, दर्द भी हुआ था,
अंजाने में हमने बहुत कुछ सहा था।

दुख सहने का ग़म नहीं है,
दुख सहने का ग़म नहीं है,
क्योंकि उन्होंने हमारे हौसलों को ना छुआ था।

वो ज़ज़्बा ही अनोखा था,
वो ज़ज़्बा ही अनोखा था,
जिससे उन मंज़िलों का सफ़र हँसते-हँसते हुआ था।



ज़िन्दा लाश



वो बेगाना समां था और उस समय हम...
अब तुम्हें क्या बताऊँ, क्या कुछ झेल रहे थे हम।
तुम्हें अपनी दास्तान सुनाऊँ या नसीब का हाल बताऊँ,
या एक खाली कागज़ रख कर उसमें बस दुख लिख जाऊँ।
इससे बुरे हमने देखे थे वो सितम,
अब तुम्हें क्या बताऊँ, क्या कुछ झेल रहे थे हम।
लोगों की कमी नहीं थी मेरे पास,
उन्होंने खूब दिखाया था मुझमें विश्वास।
पर मैं तो ज़िन्दगी से हार गया था,
अब नहीं थी मुझमें जीने की आस।
फिर भी न जाने क्यों जी रहा था,
बन कर एक ज़िन्दा लाश।
टूट चुका था मेरा अब वो अंतर मन।
अब तुम्हें क्या बताऊँ, क्यों कुछ झेल रहे थे हम।



यादों की चाँदनी



ऐसी रूहानी मिल्कियत को देख यह दिल आपके दीदार करता है
हमें तो ना मिल सके आप पर जिन्हें मिले उन्हें यह खुशकिस्मत समझता है
जरूरी नहीं कि इस कायनात में हमारा मिलना लाज़मी है
क्या सागर मिला है कभी अंबर से पर इन की गहराइयों पर भी कोई शक करता है
मिलने की कोशिश तो आपसे जरूर की थी हमने
उस वक्त इस कायनात में कुछ पल लग गए थे थमने
पर इन अंधेरी रातों को अब पसंद करने लग गए थे हम
इस चांद की चांदनी यादों में ही खो चुके थे हम
आज भी मुस्कुराहट छा जाती है जब आपका खयाल आता है
जैसे उस काले से अंबर में सितारा टिमटिमाता है
किसी दिन यह सब अनछुए जज़्बात राख बन जाएंगे
जब इन्हें चार कंधों के सहारे शमशान ले जाएंगे
शमशान का रास्ता हमें लंबा ही चुनना है
वह हमारे यारों को थोड़ी देर से आने की आदत है
इस धरती को इतना जल्द हम भी ना छोड़ने चाहेंगे
कुछ पल तो हम भी उनकी यादों में जीना चाहेंगे



दूरी और हकीकत



इन दूरियों ने बताया कि वो नज़दीकियाँ क्या थीं।
इस दर्द ने बताया कि उन खुशियों की कीमत क्या थी।
न जाने इस वक़्त ने ये कैसा मंज़र दिखाया है।
आज की इस हकीकत ने बताया कि तुम्हारी औकात क्या थी।



अनकहे जज़्बात



सुनने लगा हूँ...

वो हवा की आवाज़ आज सुनने लगा हूँ।
वो अनकहे जज़्बात आज सुनने लगा हूँ।
वो खामोशी में कही हुई बातें सुनने लगा हूँ।
वो आँखों ही आँखों की बातें सुनने लगा हूँ।
वो मुस्कुराहट के पीछे का राज़ सुनने लगा हूँ।
आज तेरी वो दिल की बातें मैं सुनने लगा हूँ।



मीठी बातों का धोखा



खो गए थे हम उनकी वो मीठी-मीठी बातों में,
कुछ अनोखा महसूस करते थे हम उनकी यादों से भरी रातों में।
ये एहसास जो था, ये था तो कुछ अनोखा,
पर आँख जब खुली हो गया हमारे साथ धोखा।



वो बचपन ही अच्छा था



वो लम्हे बीत गए जहाँ दिल धड़कता था,
वो यादें बीत गईं जहाँ बचपन सिमटता था।
वो जगह बस यादों में रह गई जहाँ हमारा दिल लगता था।

अब उन यादों को भुलाने की वजह ढूँढते हैं,
पर मन ही मन उन यादों को फिर से जीना चाहते हैं,
और इस जीवन की असलियत से कहीं भाग जाना चाहते हैं।
अब कुछ मुश्किल राहों पर चलने का फैसला बना चुके हैं,
उन राहों पर चलते-चलते कुछ काँटों से दिल हार चुके हैं।
पर जिंदगी की दौड़ में इतना जान चुके हैं,
मंज़िल पहुँचने की जीत में कहीं न कहीं अपना दिल हार चुके हैं।
हम अब वो नहीं रहे जहाँ हमारा दिल सच्चा था,
यही कहूँगा बस - वो बचपन ही अच्छा था।



खामोशी का राज़



उस खामोशी की आवाज़ में कुछ तो बात है,
उस अकेलेपन के एहसास में कुछ तो बात है।
उस चेहरे की खुशियों में क्यों एक दर्द का एहसास है,
बता दो तुम - उस चुप्पी का अब क्या राज़ है?
हम चले थे उन राहों पर, जिनके मंज़र आसान न थे,
हम डूबे थे उन गमों में, जिनके दुख दर्दनाक तो थे।
उन दुखों ने इतना गिरा दिया खुद की नज़रों में,
आज लगता है - क्या हम उस दुख के हक़दार भी थे?



वो बचपन की गलियाँ



इन महलों और इमारतों के आलीशान कमरों में वो खुशियाँ पा न सके हम
आज भी याद आते हैं वो दिन जब जाने अन जाने में
उन गलियों के खेलों में खो जाते थे हम
वो मिट्टी में भरना, वो सड़कों पर दौड़ना
जो थे हँसी के ठहाके, आज है सुनसान इलाके
वो बचपन के दिन जो गुजरे चंद लोगों के संग
जहाँ खुशियाँ थीं सस्ती, और आज जिंदगी नहीं कटती
वो गिल्ली और डंडा और वो हर गली का एक गुंडा
अब इन सबको कहाँ देख पाते हैं हम
जिम्मेदारियों का नाम दूँ या परिवर्तन को इल्जाम दूँ
पर क्या इसे महसूस कर पा रहे हैं हम



खुद से वफ़ा



वो बीते लम्हों की गहरी साँसे क्यों जीते हो
इन दिलों की धड़कन से तुम अक्सर क्या कहते हो
उन राज़ की बातों को थामे अब तक क्यों बैठे हो
वफ़ा करो खुद से भी तो क्यों ऐसे मायूस तुम रहते हो
भूलो मत कहीं दिलों में अभी भी तुम राज करते हो



अनकही बात



एक बात थी जो मैं तुम्हें बता न सका
कुछ जज़्बात थे जो मैं तुम्हें जता न सका
उन अंधेरी रातों के कुछ ख्वाब थे जो मैं तुम्हें दिखा न सका
ये दिल बस बेचैन था जो तुम्हारे लिए धड़कता था
क्योंकि इन बेचैनियों में मैं कभी चैन से सो न सका



अपनों की मुस्कान



जिंदगी के उन कुछ लम्हों में जब अपनेपन का एहसास चाहिए
परिवार के साथ बीते खुशी के पलों से ज़्यादा और क्या खास चाहिए
लोग तो यूँ ही अपनी खुशी दूसरों में ढूँढते हैं
हमें तो माँ-बाप की मुस्कुराहट से मिलने वाली खुशी का ही एहसास चाहिए



सूनी राहें



जिन राहों पर प्यार की तलाश किया करते थे
उन्हीं राहों पर आज सूना सूना लगता है
ऐसा नहीं है कि उन राहों पर यादें कम थी हमारी
आज उन्हीं यादों की याद में दुआ करते हैं
खुशियाँ जब हमें हर छोटी सी चीजों में मिलती थीं
आज उन खुशियों के मिलने की बस दुआ ही करते हैं



इंतज़ार की धड़कन



वो लम्हे, वो आहटें, वो मीठी सी मुस्कराहटें
इस चुप्पी में भी याद आती हैं तेरी वो बातें
वो तकिये पर सोना और उन्हीं तकियों पर रोना
दिलों के पास होते हुए भी तेरा दूर सा होना
वो बच्चों सी बातें, वो हसीन मुलाकातें
हर पल वो तेरी बस याद दिला जाते
उन जज़्बातों का उभरना, ये इंतज़ार मेरा करना
भूल न पाते जो लम्हे हमने काटे
मायूसी सी छाती जब यादें तेरी आती
इंतज़ार करते करते बेचैनी हो जाती
उस उम्मीद का हाथ जो थामा है मैंने
कि बात तो होगी ये माना है मैंने
इस वक्त के कटते और धक धक के बढ़ते
दुखी तो हूँ मैं मगर हँसते हँसते



दिल कुछ और समझा था



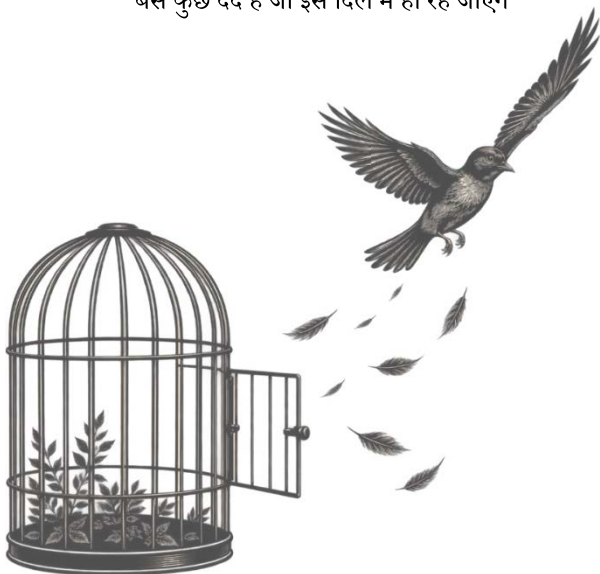
हर बात पर मुस्कुराना ये उसकी आदत थी
पर ये दिल कुछ और समझा था
बात करते वक्त आँखों में देखना ये उसकी आदत थी
पर ये दिल कुछ और समझा था
नए लोगों से घुलना मिलना ये उसकी आदत थी
पर ये दिल कुछ और समझा था
रात में लोगों से बातें करना ये उसकी आदत थी
पर ये दिल कुछ और समझा था
अकेलेपन में दोस्त को गले लगाना ये उसकी आदत थी
पर ये दिल कुछ और समझा था
कंधे पर अपना सिर रख कर वो कहीं खो गई थी
पर ये दिल कुछ और समझा था



इश्क का दर्द



ये इश्क का दर्द सहा है लाखों ने
इसकी कीमत भरी है आँखों ने
ये दिल का टूटना तो लाज़मी है
इंसान का रूठना लाज़मी है
हम टूट जायेंगे हम रूठ जायेंगे
इस दुनिया से कुछ गहरे घाव ले जायेंगे
ये नहीं पता कि कब कोई हमें अपना बनायेगा
अब तो लगता है जैसे ये शरीर ही रह जायेगा
इसे चार कंधों के सहारे कोई श्मशान ले जायेगा
वहाँ इस शरीर को भी अग्नि में जला दिया जायेगा
खाली हाथ आए थे खाली हाथ जाएंगे
बस कुछ दर्द है जो इस दिल में ही रह जाएंगे



रज़ा में चलना



इंसान हर दुख को अपने ऊपर क्यों ले लेता है
वो उस दुख की वजह खुद को क्यों समझता है
जबकि इस धरती पर जो होता है निरंकार की मरज़ी से होता है
और निरंकार में यकीन करने वाला उसकी रज़ा में ही चलता है



अनकहा आभास



न जाने आज एक अनोखा एहसास हो रहा है
इस दिल में किसी के होने का आभास हो रहा है
उस चेहरे की खुशी देख कहीं खो सा जाता हूँ
जैसे किसी डूबते को किनारे का साथ मिल रहा है



आखिरी सलाम



उन हवाओं का सन्नाटा जरूर कुछ पैगाम लाया है
बेचैनी महसूस हो रही है, शायद किसी का फरमान आया है
घर में बैठ कर खुशियाँ मनाना अच्छा लगता है
पर कुछ आँसुओं के साथ किसी जवान का आखिरी सलाम आया है



एकतरफ़ा



दुख इस दिल में भी हजारों है
हमने तो नहीं करी इनपे कोई चर्चा
प्यार हमने तुमसे ही किया है
भले ही किया है एकतरफ़ा

दुख इस बात का नहीं कि तुमने मुझको नहीं चुना
बल्कि इस बात का है कि चुना उसको जो करता था तुमपे खर्चा



मीठा ज़हर



वो अपनी निगाहों से डस रहा है मुझे,
न जाने फिर भी वो क्यों जँच रहा है मुझे।

जानता हूँ वो बाद में मुझे काटेगा,
पर उससे कटवाने का दर्द भी अच्छा लग रहा है मुझे।



वो मदहोश महफ़िल



याद है क्या वो महफ़िल, जिसमें नैन मटक्का हुआ था,
नाचते-नाचते नज़दीकियों का एहसास तो हुआ था।
फिर जब पी ली थी शराब, तब मैं कुछ मदहोश सा हुआ था,
एहसास ही अलग था उस समाँ का,
जब तेरे *अधर ने अधर* को छुआ था।



खाली बोतल



बन गया हूँ खाली बोतल सा,
अब मुझे धक्का मत देना।
धक्का दे भी दो चलो,
मगर ज़ोर से मत देना।

कभी हम भी तेरे काम आए थे, जब खुशियों से भरे थे,
अब बस कबाड़ समझ कर बेच न देना।



सच की दोस्ती



जरूरत क्या है तुम्हारी तारीफ़ की,
मैं तो सच्चाइयाँ ही बताने में लगा हूँ।
चाहे लोगों के लिए जैसे भी हो आप,
मैं तो दोस्त ही मानता चला हूँ।

माना हम अक्सर बात नहीं किया करते हैं,
फिर भी दिलों के जज़्बात समझने में लगा हूँ।

बुरा थोड़ी सोचता हूँ तुम्हारा,
फिर भी डरते हो कि तुम्हें तुमसे ज़्यादा जानने में लगा हूँ।

और क्या कहूँ मैं अब इस बारे में,
बस जब भी हम मिलते हैं, कुछ खुशियों के पल बनाने में लगा हूँ।



दगा के बाद



वो प्यार हमसे कुछ इस तरह कर गए,
इस टूटे दिल के साथ फिर दगा कर गए।

खफ़ा रहता है ये दिल अब सबसे,
तुमसे दूर हुए हैं हम जब से।

लगता है ये दिल अब वापस लगेगा नहीं,
धड़केगा, फिसलेगा मगर झुकेगा नहीं।

ऐसे ज़ख्म जो दिया है उसने इस दिल पे,
रोता रहता है वो अब हर पल में...
रोता रहता है वो अब हर पल में।



मौन के अंदर



खफ़ा हम तुझसे हकीक़त में तो न थे,
खफ़ा हम तुझसे हकीक़त में तो न थे,
पर उसकी तेरे लिए वफ़ाई ने तुझसे खफ़ा करवा दिया।

वो उसकी आवाज़ जो मेरा नाम पुकारती है,
वो उसकी आवाज़ जो मेरा नाम पुकारती है,
मुझे लगा कि कुछ तो ज़रूर वो मुझसे चाहती है।
पर जब हम वाकिफ़ हुए उस हकीक़त से,
न जाने उसकी आवाज़ में हर लड़के को अपना नाम क्यों सुनाई देता है।

इस हृदय की गहराइयों में देखो,
तुम्हें ज़रूर कुछ अनछुए भाव मिलेंगे।
थोड़े से धुंधले ज़रूर हैं, पर इन्हें खोल कर देखो,
आज भी मेरे अंदर महफूज़ मिलेंगे।

कहीं गैरों ने इन्हें खुरेदना चाहा है,
कहीं अपनों ने भी इन्हें खुरेदना चाहा है,
पर तुम मेरे इन जज़्बातों को देखो,
अब लगता है ये वापस कभी किसी से न मिलेंगे।

अन जाने में मुझे क्या हो गया है,
कोई इसे तो देखो...
उस मौन में भी ये चेहरे के जज़्बात तुम्हें कुछ तो कहेंगे।
अरे कोई कभी तो खुद से पहले मुझे तो देखो,
देख लेना फिर ये दिल भी ज़रूर मिलेंगे...
ये दिल भी ज़रूर मिलेंगे।

यादें और विश्वासघात



जो दिल की बातें तुमने की हैं, स्वाद लगती हैं,
जो वादे किए थे निभाने के, तुम्हें याद लगते हैं।

मैं खामखा तुम पर शक कर रहा हूँ,
पर क्या करूँ...

आजकल हर बात ही मुझे विश्वासघात लगती है।



छूटा हुआ अहसास



वो रह गया दिल में जो कहना चाहिए था।
वो सह लिया हमने जो न सहना चाहिए था।
वो दर्द जो सहा है, शब्दों में बयां नहीं कर पाएंगे।
क्या-क्या गुजरा है इस दिल पर, हम कैसे बता पाएंगे।
बता तो देते हम सब तुम्हें, बस तुम्हें रहना चाहिए था।
अब पछताना क्या होगा, शायद तब हमें जीना चाहिए था।



जीवन की राहें



सुन-सुन कर अब थक गया हूँ,
देखता सब हूँ, पर थोड़ा थम गया हूँ।
इन हालातों के चलते और जीवन के कटते पलों में,
पूछता हूँ खुद से - क्या खुद से खुश रहा हूँ?
न जाने अब मैं क्या कर रहा हूँ,
अब खुद से बस यही सवाल करता हूँ -
कि दूसरों को अपना बनाने से क्यों डरता हूँ।
वक्त की इन सीखों से सीख रहा हूँ,
कि इन हालातों से लड़ना ही तो ज़िंदगी है।
और मैं इस ज़िंदगी में जीने की कोशिश कर रहा हूँ



खुद से मुलाकात



आज फिर खुद से बात करने का मौका आया है,
इस वक्त ने हमें फिर हमसे मिलाया है।
वो अनछुए जज़्बात आज फिर उभर आए हैं,
वो जज़्बात जो दफ़न थे, आज फिर जाग आए हैं।
अब यादें जब भी आती हैं, इस पल को थमा जाती हैं,
हमें उस इंसान से मिला जाती हैं, जिसे हम बदलना चाहते हैं।
जिन यादों को कभी भूल गए थे हम,
वो अब फिर दस्तक क्यों दे रही हैं?
इन बहती हवाओं के साथ क्या ये हमें फिर कुछ कह रही हैं?
इन विचारों की उलझनों का जवाब न पहले था, न अब है,
हम परेशान हो जाते हैं इन खयालों की सोच में।
पर आज के मुझमें इतना तो फर्क जरूर है,
कि वक्त ने सिखा दिया - जो है, अब वही सब सही है।



फिर से बचपन



आज बहुत समय बाद समय मिला है
खुद के बारे में सोचने का वक़्त मिला है
परिवार के साथ खाने का लुत्फ़ मिला है
उनके साथ खेलने का मज़ा मिला है

ये बात तो सोचा करते थे हम
वो बचपन के दिन क्या वापस जी पाएंगे हम
आज उस बचपन के दिन देखने का मौका मिला है
साथ मिलकर घर के काम करने का मौका मिला है

पूरे परिवार के साथ बैठकर आज हँसते हैं हम
उनके साथ आज बातें करते हैं हम

फिर से आज उस छत से आसमान देखने का मौका मिला है
माँ-बाप को देखकर उठने और सोने का मौका मिला है



अधूरा सा मैं



तू है तो मैं हूँ, बिन तेरे जैसे अधूरा हूँ
तू नहीं तो जैसे कुछ भी नहीं
तेरी यादों के सहारे मैं जी रहा हूँ
तेरी वो यादों से याद आने वाली वो हँसी
उस हँसी को महसूस कर खुश मैं रहूँ
तेरे वो दुख के पलों में बहते हुए वो आँसू
उन लम्हों में तेरी मुस्कुराहट की वजह मैं बनूँ
हर एक पल जो साथ बीता था हमारा
उन पलों को अनछुए जज़्बातों का नाम मैं दूँ
पर बीत गए हैं वो पल जो कभी जिए थे हमने
अब उन पलों को याद कर दर्द मैं सहूँ
बस अब उन पलों को याद करते करते
खुद से एक सवाल मैं करता हूँ
कब आएँगे वो पल वापस और फिर दोबारा मैं जिऊँ



वो शख्स खो चुका है



वो शख्स अब खो चुका है
थोड़ा पागल हो चुका है
कहता तो है कि ज़िंदा है
पर अपनी ज़िंदगी खो चुका है
सन्नाटों से बातें करता है
अपनी मौत का इंतज़ार करता है
दिखाता तो है कि खुश है
पर चेहरे की मुस्कान खो चुका है
हँसते हँसते वो रोता है
दिल के अंदर यादों में खोता है
कहता तो है प्यार करता है
पर दिल को वो पत्थर कर चुका है
न जाने उसके साथ क्या बीता है
अपने फटे कपड़े भी सीता है
कहता तो है कि यादें नहीं सी सकता
नहीं तो तुम भी देखते ये इंसान क्या जीता है
इसका प्यार तो हमने देखा है
महबूब को खुदा मानते भी देखा है
कहता तो है कि उसको भूल चुका है
पर उसके लिए रो भी बहुत चुका है
वो शख्स अब खो चुका है
थोड़ा पागल हो चुका है
कहता तो है कि ज़िंदा है
पर अपनी ज़िंदगी खो चुका है

इज़हार-ए-इश्क



वो इज़हार-ए-इश्क कुछ इस तरह कर गए,
कि दिल के दर्दों पर एक पर्दा कर गए।
हमने तो उन्हें चाहना बस शुरू किया था,
वो तो हमें अपना दीवाना कर गए।



औकात का एहसास



न जाने क्यों मेरे दिल में ये बात आती है,
उसे देखते ही ज़मीन पर सारी कायनात आती है।
पर उन कायनातों से अब हमें इतना मोह नहीं,
क्योंकि अब मेरे लिए पहले मेरी औकात आती है।



अधूरे रिश्ते



कुछ रिश्ते हैं जो रहते अधूरे हैं,
कुछ वादे हैं जो कभी न पूरे हैं।
कुछ ख्वाहिशें हैं जो दिल में समाई हैं,
उन्हें पाने की आस में इन धड़कनों में भी तन्हाई है।
इन धड़कनों के धड़कने से दिल के दर्द धड़क जाते हैं,
उन्हें पाने की आस में हम बेचैन हो जाते हैं।
इस इंतज़ार में ये आँसू भी सूख चुके हैं,
इस ज़िंदगी में जीते-जी हम जीना भूल चुके हैं।



गहरे राज़



कुछ राज़ इतने गहरे हैं इस दिल में, बताऊँ तो शाम निकल जाएगी,
कुछ ज़ख्म इतने गहरे हैं कि महसूस करूँ इन्हें तो जान निकल जाएगी।



वफ़ा की पुकार



जान तो हम दे देंगे, तुम आजमाओ तो सही,
वफ़ा तो हम कर जाएँगे, तुम अपनाओ तो सही।
ये इश्क़ न अधूरा रहेगा, ये इश्क़ भी पूरा होगा,
बस तुम हमसे नज़रें मिलाओ तो सही।



तेरे नाम की मुस्कान



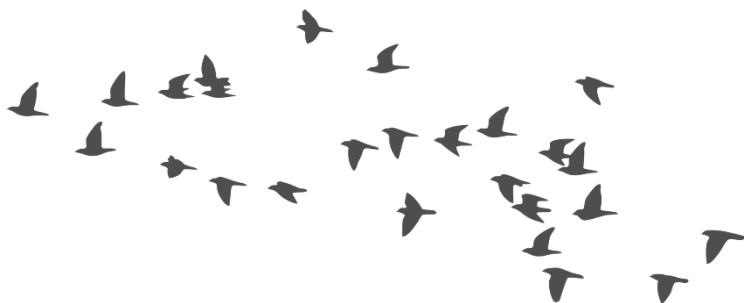
इन आँखों में थकावट देख तेरे इंतज़ार की है,
इस दिल में धड़कन देख तेरे प्यार की है।
कौन कहता है मोहब्बत सिर्फ दर्द देकर जाती है,
इस इंसान की मुस्कुराहट देख, सिर्फ तेरे नाम की है।



खुद को समझना



उन अनजान राहों पर अब हम चलने लगे थे,
जो करने से कभी हम डरते थे, अब करने लगे थे।
न जाने इन आँखों से आँसू अब क्यों गिरने लगे थे,
लगता है दूसरों को समझते-समझते हम खुद को समझने लगे थे।



चाँद और गुरुर



वो चाँद की चाँदनी भी फीकी पड़ जाएगी,
अमावस के आते ही वो कहीं खो जाएगी।
क्यों गुरुर करते हो इस चेहरे की चमक पर,
एक दिन इस पर भी झुर्रियाँ पड़ जाएँगी।



प्यार की कसौटी



क्या ये मेरा साथ निभा पाओगी तुम?
उस खून से लिखे खतों को फाड़ पाओगी तुम?
उन बीती यादों को भूल पाओगी तुम?
बता ही दो, इस प्यार को कैसे ठुकराओगी अब तुम?



रूवाब



वो सो रहे हैं, पर न जगाओ आज उन्हें,
क्या पता आज सपना मेरा देख रहे हों।



अनजाना सा रिश्ता



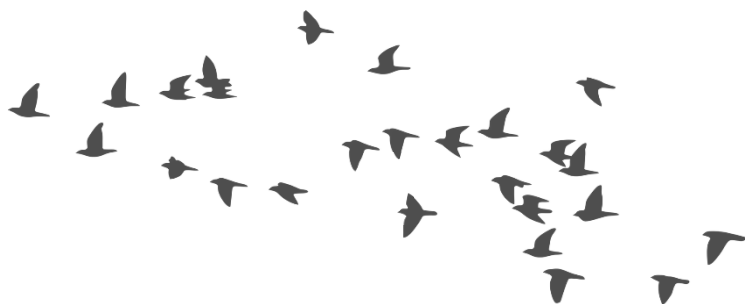
हम तो तुमको जानते तक नहीं थे,
पर न जाने मुझमें क्यों बसी हो तुम।
हमने तो कितने ही सपने देख लिए हैं तुम्हारे साथ,
अब क्या ये जानती हो तुम?



दर्द की आदत



उस दर्द को भी अब सह लेता हूँ,
जिस दर्द की दवा ही तुम थी।



नज़र का असर



मत उतारा करो इतनी जल्दी अपनी नज़रों से,
हम तो आपकी नज़र उतार कर बैठे हैं।



अधूरापन



ये चाँद जिस दिन पूरा दिखने लगता है,
ना जाने मुझे क्यों कुछ अधूरा लगने लगता है।
वो एक लहर इस मन में उठ जाती है,
जो आहिस्ता से तेरा नाम ले जाती है।
उन चाँदनी यादों में कहीं खो सा जाता हूँ,
ना जाने क्यों फिर खुद को अधूरा पाता हूँ।



जनाज़े की सच्चाई



वो जो तेरे जनाजे पर भी रोए नहीं,
तू सोचता था तेरे बिछड़ने पर रोएँगे।



दिल की दस्तक



वो जो दिल पर दस्तक तुमने दी है, अच्छा लगता है,
वरना तो इसने धड़कना कब का बंद कर दिया होता।



शक और वफ़ा



सिर्फ कहने की बात करते हो या उन बातों पर भरोसा भी करते हो?

वफ़ा है तो तुमसे - ये मैंने कहा था,
तुम क्यों इस बात पर शक करते हो?



खामोश मोहब्बत



वो सह कर भी चुप है आज,
सोचो मोहब्बत कितनी करते होंगे।



लफ़्ज़ों का जाल



लफ़्ज़ों के जाल में जो तुमने फँसाया है,
आज तक मुझे निकलना नहीं आया है।
खो जाता हूँ उन लफ़्ज़ों के खयालों में,
बस सवाल ये है - क्या तुमने कभी सच दिखाया है?



भुला न पाए



इस दिल में जो दर्द है, अब क्या बताएँ,
उन प्यार की चोटों को कैसे छुपाएँ।
भले ही जीवन में लोग आते-जाते रहें,
खुदा गवाह है, हम तुम्हें कभी भुला न पाएँ।



ज़िंदगी और जीना



वो कहती थी कि तुम इन दोस्तों को छोड़ क्यों नहीं देते,
तुम ही तो कहते हो तुम्हारी ज़िंदगी तो मैं हूँ।
काश वो हमें इतना तो पहचान लेते,
कि मैं ज़िंदगी तो छोड़ सकता हूँ, मगर जीना नहीं।



खफ़ा या बेवफ़ा



वो कहते हैं कि हम उनसे खफ़ा हैं,
अरे ज़रा उनसे भी पूछो क्यों वो इतने बेवफ़ा हैं।



इज़्जत और एहसास



रोती हुई आँखें देख, ये दिल भी भर आया था।
सोचा, उन्हें गले लगाऊँ, पर फिर मन को समझाया था।
ये गलती दुबारा न कर, अपनी इज़्जत को पहले भी खोकर,
तूने अपना पहले भी कटवाया था।



दिल के राज़



ये दिल के जो दर्द हैं, इसी दिल में समाए हैं।
आँसुओं के रूप में आज, कुछ राज़ बाहर आए हैं।
तुम क्यों होते हो परेशान, इन तकलीफ़ों से मेरे दोस्त,
हर जगह इस हँसी के पीछे, यही दर्द लोगों ने छुपाए हैं।



एकतरफ़ा प्यार



एकतरफ़ा प्यार ही सही, दिखाने तो दो,
इस दिल के जज़्बात ही सही, जताने तो दो।

फिर जो जी में आए वो कर लेना,
इन भावों को कभी बताने तो दो।



तेरी किस्मत के नाम



तेरी किस्मत में किस्मत की बात लिख दूँ,
तेरी ज़िंदगी में कुछ अनोखे ख्वाब लिख दूँ।
वफ़ाई, खुशियाँ, प्यार - ये सब जो भाव हैं,
तू कहे तो एक-एक करके तेरे नाम लिख दूँ।



अधूरा इज़हार



उसकी आवाज़ का नशा जो मुझ पर छा रहा है,
ये जज़्बात मेरे दिल में अब नहीं समा रहा है।
सोच रहा हूँ इन जज़्बातों को उसे आज बता ही दूँ,
उसे जताने से मुझे याद आया -
कि मैं पहले से किसी और का हूँ।

